**अब तो बस खुदा ही जाने**

सुबह की चादर रात का सिरहाना

मेरे सपनो में उसका जुगनू सा जगमगाना

उसकी एक मुस्कान कर देती है हमें दीवाना

हम चाहने लगे है तो बस तारों की तरह उसका टिमटिमाना

सुबह की किरने लाती है उसकी एक जालक की उमंग

मचल जाता है मन कुछ यूँ जैसे पानी में तरंग

आश करते है तो बस उसे अपना बनाने की

नहीं करते परवाह हम किसी ज़माने की

दिन हमारा उसकी याद में कुछ यूँ निकल जाता है

जैसे कोयले की खान में किसी को हीरा मिल जाता है

फूल सी मुस्कान उसकी जब आती है हमें नज़र

हम रह जाते है तनहा और हो जाते है बेखबर

आँखें उसकी आस में कुछ यूँ टिकाये रहते है

हम उसकी याद में सपने सजाये रहते है

नहीं हो पाती चार, जब हमारी ये दो आँखें

फ़िक्र उठती है दिल में और मन कहता है अब तो बस खुदा ही जाने!

**किशोर पाठक**